शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

- प्रस्तुति : सिद्धार्थ शंकर

हिन्दी स्नातकोत्तर विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

www.shodh.net

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

- प्रस्तुति : सिद्धार्थ शंकर

शिमला का ऐतिहासिक महत्त्व है। यह अंग्रेजों की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। वहाँ से वर्मा, श्रीलंका एवं पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त समेत पूरे भारत वर्ष पर औपनिवेशिक फरमान जारी किये जाते थे। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ से कभी पूरे भारत का ही नहीं बल्कि रंगून से लेकर पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर हिस्से और दक्षिण में श्रीलंका तक का शासन चलता था। खैर अब सब कुछ तो अतीत हो गया, मगर साम्राज्यवाद के पदचिह्न यहाँ अभी भी मौजूद हैं। अब भी अतीत की इन स्मृति की रेखाओं के सहारे पुराने शिमला शहर की सैर की जा सकती है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सबसे सशक्त पदचिह्न यहाँ वायस रीगल लॉज के रूप में मौजूद है। इसे राष्ट्रपति निवास के रूप में जाना जाता है। लेकिन ध्यातव्य है कि सन् 1965 तक जो राष्ट्रपति निवास था उसे डॉ एस0 राधाकृष्णन ने देश में उच्च अध्ययन के नाम पर समर्पित कर दिया। यह आज देश भर में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान के नाम से जाना जाता है।

दुनिया के अन्य हिस्सों में भी ऐसे उच्च अध्ययन संस्थान है। लेकिन इन उच्च अध्ययन संस्थानों की परिकल्पना एकान्तवास साधना की है। लेकिन इसकी परिकल्पना कुछ भिन्न है। इसमें एकान्तवासी बौद्धिक साधना की अच्छी व्यवस्था तो है ही, साथ ही इसमें और भी कुछ है। इस ''और भी कुछ'' का तत्व ही इस अध्ययन संस्थान को विशिष्ट बनाता है और उसे एक गतिशील संस्थान का स्वरूप प्रदान करता है। दरअसल, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में विभिन्न विषयों पर गहन अनुशीलन के लिए अध्येतावृत्ति प्रदान की जाती है। ये विषय अधिकांशत: सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के हैं। विभिन्न अनुशासनों के अद्यतन एवं युक्तिसंगत विषयों पर यहाँ अध्ययन किया जाता है। विश्वविद्यालय के अध्यापकों एवं अन्य शोधर्थियों के लिए यहाँ ठहरने और खाने की यथोचित व्यवस्था हैं। एक साल और उसके बाद पुन: एक साल तक की अध्येतावृत्ति के उपरान्त यहाँ चयनित विषय पर मोनोग्राफ प्रस्तुत करना होता है। संस्थान का प्रकाशन विभाग इसे प्रकाशित करता है। इस संस्थान में देश भर के विद्वान् एवं अनुसंधेता अपने-अपने विषयों पर शोध एवं अनुशीलन करके जो सामग्री प्रस्तुत करते हैं, उससे इस संस्थान का महत्त्वपूर्ण प्रकाशन संग्रहालय बन गया है। यहाँ प्राचीन, अर्वाचीन, पौराणिक से लेकर अद्यतन विमर्श जैसे भाषा, संस्कृति, साहित्य, समाज राजनीति इत्यादि क्षेत्रों में अध्येताओं के अनुसंधान से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है।

यहाँ से संबद्ध अध्येताओं की दो कोटियाँ हैं-

राष्ट्रीय अध्येता और अध्येता

राष्ट्रीय अध्येता ख्याति प्राप्त विद्वान् होते हैं। इनकी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा होती है। इन्हें संस्थान सादर आमंत्रित करता है। और संस्थान में वे राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सक्रिय भाग लेते हैं, वहाँ की गोष्ठियों और कार्यशालाओं में व्याख्यान देते हैं और संस्थान में इन राष्ट्रीय अध्येताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। दूसरी कोटि सामान्य अध्येताओं की है। ये अध्येतागण स्वयं के चयनित एवं संस्थान द्वारा संस्तुत विषय पर अध्ययन एवं शोध कार्य करते हैं। अध्येतागणों में से प्रत्येक को महीने में एक बार शोध पत्र प्रस्तुत करना होता है और वे उसका वाचन करते हैं। उस पर प्रश्न और उत्तर का विचारोत्तेजक सत्र चलता है।

राष्ट्रीय अध्येताओं एवं अध्येताओं के अलावा सह अध्येता भी चयनित होते हैं। सह अध्येतागण यहाँ तीन साल के किसी एक माह में यहाँ आ सकते हैं। उन्हें अपने द्वारा चुने गये विषय पर शोध प्रपत्र तैयार करके उसका वाचन करना होता है। उस प्रपत्र पर भी प्रश्न और उत्तर के सत्र होते हैं।

इसके अलावा संस्थान का एकान्तवास साधना सिद्वान्त से अलग रूप उस समय भी प्रगट होता है जब यहाँ राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय या समसामयिक विषयों को लेकर चर्चाएँ एवं परिचर्चाएँ तथा राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित होती हैं। इन पर भी जमकर बहसें होती हैं। विषय का आभ्यंतर से लेकर उसके बहि:अंतर के अर्थ संदर्भो को खंगाला जाता है। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की एक और विशिष्टता इसमें अतिथि आचार्यों का व्याख्यान है। इन व्याख्यानों को संस्थान नियमित रूप से आयोजित करता रहता है।